बचपन से ही मेरे
मन पर सुसंस्कार
करने वाली मेरी
परम पुज्य माँ श्रीमती
इंदिराबाई जोशी (अक्का)
को !

सादर

डॉ. शंकरदयाल शर्मा
पुर्व राष्ट्रपती
२३ सफदरजंग रोड,
नई दिल्ली.
विजयादशमी, १ अक्टुबर,१९९८.

समर्थ स्वामी रामदास जी मध्यकाल के अत्यंत प्रेरणादायी संत हूए हैI उनकी गहरी अध्यात्मिक वाणी को हिंदी गितों मे पिरोने का काम श्री अशोक जोशी ने कीया है, वे साधुवाद के पात्र है I

श्री. शंकर दयाल शर्मा

ॐ नमो नारायणाय II
Very happy to see this Hindi language poetical Version of samarth Ramdas' Well knowen Marathi Poem "Manache Shlok" or "Mano bodh" you have rendered a significant service to the vast number non–Marthi knowing– reading public.

God Bless You.
I wish your book widest
Possible Circulation
Jai Gurudeo

प्राक्कथन

महाराजा छत्रपती शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास स्वामी दिव्य पुरुष थे बचपन मे ही उन्होने विश्वके उध्दार की चिंता की थी वे जब बहूत छोटे थे तब एक बार ए ऐसे कोने मे जा बैठे कि कीसी को पता ना लग सके माता को जब रामदास नही दिखाई दिया तब वह चिंतीत हुई और उसे ढूंढने लगी एक कोने मे वह समाधी जैसी अवस्था मे दिखाई दिया माता ने पुछा, अरे, यहा अकेले बैठे एकांत मे क्या कर रहा है ?

तब बालक ने उत्तर दिया, मै विश्व की चिंता कर रहा हूँ I

माता सुनकर अवाक हो गयी I

समर्थ रामदास स्वामी की वैराग्य वृत्ती बचपनसे ही रही थी I माता ने बहूत सोचकर उसके विवाहकी योजना बनायी तब भी विवाह के मंडप से यह युवक भाग निकला I

पश्चात कठोर तपस्या की, साधना की I फलतः उनकी वाणी मे तेज आ गया, प्रखर प्रज्ञा जागृत हूई I

ऐसे महा पुरुषों, संतो का जीवन अपने लीये नही होता I जनतोध्दार, समाजोध्दार, देशोध्दार, के लीये ही उनकी काया, वाचा, मति धृति, जागृति होती है I समर्थ रामदास स्वामी ने समाजमन के प्रबोधन के लीए, पुरुषार्थ जगाने के लीऐ मनाचे श्लोक (मराठी) नामक रचना की I ऐसे महापुरुष की वाणी तपःपुत बनी थीI अतः मनाचे श्लोक रचते समय एक एक शब्द भावहृदय तथा तन को प्रेरक स्पर्श करनेवाला बन गया था I यह अत्यंत सरल शब्दोसे युक्त, फिर भी जिवन के दर्शन की दृष्टीसे एक गंभीर काव्य रचना बन गई थी I

परंतु यह रचना मराठी मे थी, और फलतः ईसे समझनेवाले केवल महाराष्ट्र में सीमीत रहे I

कवीमन के श्री अशोक जोशीजी ने उपर्यक्त त्रुटी को जाना, पहचाना I इसलीये उन्हे मनाचे श्लोक रचना को हिंदी मे अनुवादीत करने की प्रेरणा हुई I हिंदी राष्ट्रभाषा होने से यह भाषा बोलने, समझने, पढनेवालोंकी संख्या अधिक है यह भी उन्होनें जाना I

पूज्य समर्थ की वाणी अर्थगंभीर,भावगंभीर तथा प्रेरक है I उसका अनुवाद करना सहज कैसे होगा? फिर भी श्री.अशोक जोशीजी ने अनुवाद का शिवधनुष्य उठाने की अपने मन मे ठान लीऔर अनुवाद की तपस्या प्रारंभ की I चिंतन और गहरा चिंतन कर कर के उन्होने एक एक शब्द नाप–तोल कर भावानुवाद और कही कही शब्दानुवाद की तपस्या की I

जब कभी योग्य शब्द नही मिल पाता था, तो वे अनुकूल शब्द के लिये अखंड चिंतन करते थे I ईश्वर केआशिर्वाद (अंत प्रेरणा) से जब इस अनुवाद का श्रीगणेश हुआ था I तो अनुरुप शब्द के चयन के लिये अतः प्रेरणाही उनकी सहायता करती थी I

संतश्रेष्ठ तुकाराम भी महाराष्ट्र के एक महान संत रहे है I उन्होने शब्दोकी महत्ता, श्रेष्ठता, अर्थगंभीरता ज्ञान कर रहा है I शब्द आमच्या जिवाचे जिवन.... अर्थात शब्दही हमारे जिवन का जिवन है I श्री अशोक जोशीजी शब्दों की शक्ति को, और संत तुकाराम महाराज की इस उक्ति को जानते थे I इस लिये उन्होने अनुवाद करते समय शब्दों का चयन बहुत गंभिरता से किया है I कुछ नमुने प्रमाण के लिये पेश कर रहा हूI

देह बुध्दी की चरम सीमा विदेही बनने में है I इसलिये देहबुध्दी के बदले विदेही शब्द अधिक अनुकुल बना है I (श्लोक क्र.१२)

मना मिथ्य ते मिथ्य सोडुनि द्यावे इस पक्ति के अनुवाद मे श्री अशोक जोशीजी ने लिखा है मिथ्या को अपनी जिहवा पर न लाना I
यहाँ मिथ्या का त्याग, जिहवा पर मिथ्या शब्दका उच्चारण तक न करणे से अधिक प्रभावशाली प्रकट होता है I केवल मिथ्या का त्यागही नही उस शब्दका उच्चारण तक न हो, ऐसी सावधानता बरतने इस पंक्ति में कहा है I (श्लोक क्र.१९)

रघुनायका दृढ चित्ती धरावे इस पंक्तिका अनुवाद हृदयमें सदा रामजी को बसाना करने से धरावे की अपेक्षा बसाना शब्द अधिक प्रभावकारी बन गया है I धरने अपेक्षा बसाने की क्रिया निरंरत के लिये होती है I (श्लोक क्र.२२)

पुढे अंतरी सोडी चिंता भवाची इस पंक्ती का अनुवाद निश्चिंत हो भव के सागर से तरना इस पंक्ती से किया है I यहा केवल चिंता का त्याग करने के लिये नही, बल्की निश्चिंत होकर परिणाम का भी संकेत इस भावानुवाद मे उतर आया है I रामजी की भक्ति में न केवल निश्चिंत होने की शक्ति है, बल्कि भवसागर तरने की क्षमता भी हैI

अंत मे

मनाची शतें ऐकता दोष जाती
मती मंद ते साधना योग्य होती
चढे ज्ञान वैराग्य सामर्थ्य अंगी
म्हणे दास विश्वासता मुक्ति भोगी II
इस पुर्ण अंतिम श्लोक का अनुवाद
मनवा न इनसे रहे दोष कोई
बने मुढ भी साधना योग्य भाई
बढे ज्ञान वैराग्य सामर्थ्य व्याप्ति
कहे दास होगी उसे मोक्षप्राप्ति II

इन शब्दों में करते समय शब्दोंका चयन कितने अनुकूल ढंग से किया है इसे स्वयं प्रज्ञावान ही जान ले I

मै विश्वासपुर्वक यह मानता हूँ कि इस अनुवादीत रचना का मराठी और विशेष रुप से हिंदी जगत प्रेम से स्वागत करेगा I

मैं अशोक जोशी जी का इस समर्थ और सशक्त भावानुवाद के लिये अभिनंदन करता हूँ और भरपुर सफलता की मनोकामना करता हूँ I

प्र.द.पुराणिक
मानस,१०७/१९,
भारती निवास कॉलनी
एरंडवणे, पुणे ४

भावांजली....

हमारे परिवार में पहले से ही श्रध्दामय तथा भक्तिमय वातावरण रहा है I शहरमे किसी संत या महात्मा का आगमन होते ही उनकी चरण सेवा करने हमारे पिताजी पहूँच जाते थे I उनके साथ मै भी जाता था I संभवतः इन्ही सब संस्कारो के कारण, मेरे हाथों जो भी कुछ काव्यलेखन हो पाया, उसमे अधिक तर भक्ति गीत ही लिखे गये I मेरा यह निरंतर मानना है कि लेखन करते समय मुझे अंतर मन से प्रेरणा मिलती है I

मेरे काव्य–गीत लेखन का प्रारंभ गीत कर्णायन से हूआ I मराठी के श्रेष्ठ उपन्यासकार आदरणीय श्री शिवाजी सावंत के लोकप्रिय उपन्यास मृत्युंजय पर आधारित इस गीतमाला के लिये मै ने महाविद्यालयीन विद्यार्थी दशा में ही मैने पैतालीस गीत लिखे थे I तब से लेकर मै ने जिन गितों का लेखन किया, उनमें से कई गितों को मेरे परममित्र स्व. शशिकांत राजदेरकर जी ने स्वरबध्द कर आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा ऑडिओ कॅसेटस् के माध्यम से प्रसारीत किया है I

परिवार मे तो बचपन से ही रामरक्षा, मनोबोध, हनुमान चालीसा, शुभम् करोती कल्याणम्,के संस्कार मनपर होते रहे हैI उनमें से कइ तो कंठाग्र हैI संभावतः इसी कारण संतश्रेष्ठ समर्थ रामदास स्वामी व्दारा रचित "मनाचे श्लोक" हिंदी में अनुवादीत करते समय मेरा मन निरंतर भावविभोर होता रहाI

मुझे इस कार्य की प्रेरणा शिवानंद आश्रम के अध्यक्ष पुज्य स्वामी चिदानंदजी से मिली, जो स्वयं अध्यात्म पर अधिकार प्राप्त कर चुके हैं I मेरे मन पर यह दृढ श्रध्दा है कि केवल ईश्वरीय संकेत के कारण ही मेरा यह कार्य पूर्ण हो पाया Iइस ईश्वरीय संकेत को मै अपना अहोभाग्य मानता हूँ I मेरी किसी रचना का प्रथम प्रकाशन राष्ट्रभाषा हिंदी मे हो रेहा है इससे भी मुझे बडा हर्ष हो रहा है I

मैने इस कार्य को हाथ में ले तो लिया, पर वह पुर्ण होने तक के मेरे इस प्रयास में कई सहृदय प्रेमियों का मुझे सहयोग मिला है I जैसे ही मै ने इस कार्य का प्रारंभ किया, मैने अहमदनगर स्थित और समर्थ साहित्य की उपासीका आदरणीय माणिकताई सोमण की सलाह ली I इस लेखन के लिये इन्होंने ही मुझे प्रोत्साहीत किया I मेरे परम मित्र तथा मराठी–हिंदी के विख्यात रचनाकार प्रा.रमेश लाहोटीजी ने इस काव्यानुवाद को संजोया है I मेरे पिताजी के परममित्र तथा मेरे लिये पितृतुल्य भारत सरकार व्दारा राष्ट्रपती एवम् अन्य कई राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त भूतपूर्व प्राचार्य श्री.प्रं.द.पुराणीकजी भी इस अनुवादित रचना के लिये आधार स्तंभ रहे हैI उसे परिमार्जित करने वे मुझे पुणे विद्यापीठ के हिंदी विभाग के प्रपाठक डॉ.श्री.प्रथमवीर जी के यहाँ ले गये I डॉ.श्री.प्रथमवीर जी ने इस काव्यानुवाद का सुक्ष्मावलोकन कर उसे पुर्ण शुध्द करने हेतू समुचित मार्गदर्शन किया I संस्कृत के प्रा.म.मो.केलकर तथा हिंदी के विख्यात व्यंग साहित्यकार डॉ.शंकर पुणतांबेकर जी ने इसे अंतीम रूप देने मे मेरी सहायता की I

इस पुस्तक का आकर्षक तथा रंगीन मुखपृष्ठ विख्यात चित्रकार तथा शिल्पकार श्री प्रमोद कांबळे जी ने बनाया है I इस के प्रकाशक है बंधुव्दय श्री हेमंत तथा प्रशांत म्हालस I उन्हें मैं कैसे भुल सकता हूँ IअपनेI प्रकाशन व्यवसाय का शुभारंभ ही इस मनुवा मेरे के प्रकाशनसे कर रहे है I

उपरोक्त सब ही सज्जनो की मैं कृतज्ञ हूँ I

हिंदी के विख्यात साहित्यीक तथा भारत सरकार के हिंदी निदेशालय के भूतपूर्व निदेशक डॉ. गंगाप्रसाद विमलजी ने इस अनुवादित रचना का चिंतन किया और उसे महामहीम पूर्व राष्ट्रपती डॉ. शंकर दयाल शर्मा जी की सेवा मे प्रस्तुत किया I इस रचना को उनका शुभआशिर्वाद प्राप्त कराने में श्री. विमल जी ने मेरी बडी सहायता की है I महामहीम पूर्व राष्ट्रपती डॉ. शंकर दयाल शर्माजी का शुभआशिर्वाद मेरे लिये मनोबल तथा आत्मबल बढाने मे निरंतर महत्व पूर्ण रहेगा I मै उनका ऋण व्यक्त करता हू I

विनीत
अशोक जोशी

मनवा गुणों का गणाधीश धाता I
निर्गुण – निराकार है यह विधाता I
माँ शारदा की शरण मे जो आता I
प्रभु राम के पंथ से उसका नाता II१II

मनवा मेरे भक्तिपथ पर ही चलना I
फिर होगा प्रभु को स्वयं तुमसे मिलना I
जो निंद्य हो तुम उसे त्याग देना I
तथा वंद्य से लीन हो काम लेना II२II

मनवा मेरे राम का नाम जपना I
देखो सुबह शाम उनका ही सपना I
सदाचार का धन कभी भी न खोना I
इसी पंथ से है तुम्हें धन्य होना II३II

मनवा मेरे ना बुरी कामना हो I
तुम्हे पाप का सोचना भी मना हो
ना धर्म नीति कभी त्यागना हो I
कुविचारो सें दुर भागना हो II४II

मनवा मेरे सत्य की डोर धरना I
नहीं पाप कोई संकल्प करना I
विषय – वासना से सदा दूर रहना I
विकारी को है नित्य निंदा ही सहना II५II

मनवा मेरे क्रोध है क्लेश दायी I
विकारों की जड काम है मेरे भाई I
न हो स्थान मद और मत्सर का कोई I
है दंभ ही जो बनाये कसाई II६II

मनवा मेरे अपनी हिंमत जुटाना I
जली हो कटी हो सभी सहते जाना I
रसना सदा नम्रता से चलाना I
सारे जगत् को ही शांति सिखाना II७II

मनवा मेरे काम ऐसे ही करना I
कि बहता रहे नित्य कीर्ति का झरना I
सेवा किसी की भी चंदन सी करना I
तथा सज्जनो के दुख सारे हरना II८II

मनवा न मन सा बने ऐसा दुख ना I
धन का किसी के भी लालच ना रखना I
है स्वार्थ ही पाप की पहली रचना I
इस के फ़लों से असंभव है बचना II९II

मनवा मेरे राम से प्रीत जोडों I
तथा दु:ख के एहसास को ही मरोडो I
दुखों मे है सुख यह सदा मान लेना I
विवेक एक शक्ति है यह जान लेना II१०II

मनवा मेरे कौन जगमे सुखी है I
जरा सोच ले होत काहे दुखी है I
यहाँ जो भी जैसी भी करनी करेगा I
वैसी ही वह अपनी भरनी भरेगा II११II

मनवा कभी भी दुखी तुम न होना I
कही भी किसी भी न चिंता में खोना I
तन के सुखो को यदि त्याग दोगे I
विदेही बने मोक्षप्राप्ति करोगे II१२II

मनवा हुवा अंत रावण का कैसा I
डूबा न होगा कोई राज ऐसा I
शत्रू नही वासनाओं के जैसा I
बोओगे जैसा मिले फल भी वैसा II१३II

मनवा जनम कर्म से है तुम्हारा I
है अंत मे मृत्यु का ही सहारा I
नहीं कोई जो मृत्यु से हो न हारा I
समझ क्यों न पाये कोई यह इशारा II१४II

मनवा मरण तो अटल सत्य जग मे I
रहे साँस जब तक चले सबकी मैं मैं I
स्वयं को अमर जो भी है मान लेते I
अचानक है वे भी यह जग छोड देते II१५II

मनवा किसी के मरण पर जो रोये I
आगे अकस्मात वह भी तो जाये I
जीवन की आशा ने है सबको घेरा I
तभी तो चले जन्म मृत्यु का फेरा II१६II

मनवा जो होना है हो कर रहेगा I
चिंता से तुम ही कहो क्या मिलेगा I
फल का तो है सामना सबको करना I
है अर्थ जीवन का मिलना बिछडना II१७II

मनवा मेरे ना हो आत्माभिमानी I
हो राममय ही पुरी जिंदगानी I
वेद और पुराणों मे जिसकी कहानी I
कथन करते ही शुद्ध हो जाये वाणी II१८II

मनवा नही सत्यसे दूर होना I
मिथ्या के ना ही कभी बीज बोना I
जो सत्य है नित्य कहते ही जाना I
मिथ्या को अपनी जिव्हा पर न लाना II१९II

मनवा स्थिति गर्भ की होए ऐसे I
कि नवमास का हो कोई बंदी जैसे I
अधोमुख अवस्था अति क्लेश दायी I
न ऐसी कोई यातना मेरे भाई II२०II

मनवा जिसे स्वर्ण–कांता का घेरा I
करेगा वही जन्म–मृत्यू का फेरा I
अगर यातनाओं से है नित्य लडना I
करो रामभक्ति है काहे को डरना II२१II

मनवा मुझे मेरा हित ही सिखाना I
हृदय में सदा रामजी को बसाना I
पवनपुत्र हनुमान का जो है स्वामी I
करे सबका उद्धार त्रिलोकधामी II२२II

मनवा बिना रामके कुछ न बोलो I
बुरा बोलने के लिए मुख न खोलो I
पल पल से घटती है जिवन की रेखा I
ना अंत मे छोडे कर्मो का लेखा II२३II

मनवा बिना राम के ना ही जिना I
बिना काम के ही नआये पसीना I
जिव्हा पर सदा राम का नाम रखना I
अहं को कभी भी हृदय मे ना लाना II२४II

मनवा बुरा तुम न बातों का मानो I
मिलेंगे तुम्हे राम यह तुम ही जानो I
आयेंगी घडीयाँ सुखों की ही सारी I
रहेगी न कठिनाई कोई तुम्हारी II२५II

मनवा मेरे मर्त्य हे अपनी काया I
पीछा न छोडेगी मृत्यु की छाया I
आठो प्रहर राम की भक्ति करना I
निश्चिंत हो भव के सागर से तरना II२६II

मनवा नही भव की चिंता से डरना I
तुम्हे सामना नित्य ऊनका है करना I
स्वयं रामजी का जो वरदान पाये I
उसे ना उपेक्षा से वे देख पाये II२७II

मनवा है रघुनाथ कोदंडधारी I
जिन्हे देख यमराज भी कापे भारी I
है यह हकीकत न कोई कहानी I
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II२८II

मनवा भक्तो की करे रमा रक्षा I
खलों के घमंड का उतारे वह नक्शा I
कराये आयोध्या को सैर आसमानी
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II२ ९II

मनवा नही विश्व मे ऐसा कोई I
जो राम भक्तो की चाहे बुराई I
त्रिभुवन मे मशहूर जिनकी कहानी I
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II३ ०II

मनवा मेरे, श्रेष्ठ है जिनकी शक्ति I
दे देवताओं को संकट से मुक्ति I
स्मरे जिनको शिव और गिरीजाभवानी I
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II३ १II

मनवा अहल्या जो पत्थर बनी थी I
प्रभू–पाद पाकर ही जीवित हुई थी I
स्तुती जिनकी कर पाये ना वेदवाणी I
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II३ २II

मनवा प्रभू ने यह सृष्टि रचायी I
रवि चंद्र तारे और धरती बनायी I
दो भक्त जिनके चिरंजीव ज्ञानी I
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II३ ३II

मनवा नही कोई संदेह वैसा I
भक्तो को हो किन्तु विश्वास कैसा I
भक्तो की चिंता जिन्होने है जानी I
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II३ ४II

मनवा प्रभु के प्रति भाव जैसा I
बसेरा प्रभुका हृदय मे भी वैसा I
भक्तो की रक्षा है जिनकी निशानी I
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II३ ५II

मनवा प्रभु तो निकट मे है रहते I
धीरज की केवल कसोटी है लेते I
जो सबके आनंद सुख मोक्ष दानी I
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II३६II

मनवा प्रभु रामभक्तो को वैसे I
चक्रवाक सूरज को तरसे है जैसे I
बजे ढोल हरिभक्ति का हर जबानी I
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II३७II

मनवा है तुमको मेरी प्रार्थना ये I
दृष्टी प्रभु पर रहो तुम लगाए I
कहना कभी भी न टालो यह मेरा I
प्रभु के ही साञ्निध्य मे हो बसेरा II३८II

मनवा करे वेद गुणगान जिनका I
बढे संग जिनकी समाधान मन का I
करो सारी चंचलता अर्पण तुम उनको I
समा जाओ उनमे ही भजते हो जिनको II३९II

मनवा वही ध्यान अपना लगाना I
सच्चे सुखो का जहाँ हो खजाना I
पापों की सारी जडो को ही तोडो I
नाता प्रभु राम से नित्य जोडो II४०II

मनवा भ्रमण से सुखों की न प्राप्ति I
थकोगें न होगी दुखों की समाप्ति I
इस बात को तम भुलो कभी ना I
प्रभु के तो साञ्निध्य में ही है जीना II४१II

मनवा मेरे यह तुम्हारा हो सपना I
प्रभु राम तुमको सदा माने अपना I
जिन्हे नाथ अनाथों के सारे है कहते I
बोलो निकट उनके काहे न रहते II४२II

मनवा मेरी बात पर ध्यान देना I
कल्याण आपना स्वयं खोज लेना I
बिना रामजी के कभी कुछ न बोलो I
आठो प्रहर उनके चिंतन मे डोलो II४३II

मनवा जहाँ तक बने मुख न खोलो I
खोलो तो प्रभु की कथा मात्र बोलो I
न होंगे जहाँ राम वह स्थान छोडो I
भले ही विजन वास जीवन में जोडो II४४II

मनवा अगर कोई संतोष ना दे I
हृदय मे अहंभावना को जगा दे I
क्या लाभ ऐसा सहवास जोडे I
प्रभु राम से अपना नाता जो तोडे II४५II

मनवा जो पल है बिना रामजी के I
नही है नही है वे कुछ काम ही के I
प्रभु के बिना तो है कष्ट में मे जीना I
जो भक्त है ध्यान दे और कही ना II४६II

मनवा प्रभु को जो मन से ही देखे I
रहते है हो कर सदा वे प्रभु के I
सगुण और निर्गण मे जो भाव रखते I
प्रभु का कृपाफल तो वे ही है चखते II४७II

मनवा प्रभु काज मे जिसकी काया I
जिव्हाग्र पर जिसके प्रभुनाम छाया I
कुशलता से कर्तव्य जो भी निभाये I
वही दास प्रभु राम जी को लुभाये II४८II

मनवा कहे वह करे ऐसा जो है I
प्रभु राम को देखता सब मे वह है I
सगुण और निर्गुण जो दोनों ही जाने I
उसे ही परम भक्त जग सारा माने II४९II

मनवा न जिसमे कोई वासना हो I
सदा लक्ष्य जीवन का तप–साधना हो I
हृदय मे न जिसके कभी क्रोध जागे I
वही अन्य भक्तो से है नित्य आगे II५०II

मनवा जो स्वर्थ और मत्सर को त्यागे I
भव छोडे मद मोह से दूर भागे I
जिसकी मधुरता भरी नम्र वाणी I
निकट उसके रहते स्वयं चक्रपाणी II५१II

मनवा सदा व्यस्त जो कीर्तनों में I
फँस जाये जो व्यर्थ ही वितर्को मे I
जो सारी उत्पत्ति का भेद जाने I
उसे ही सदा रामजी श्रेष्ठ माने II५२II

मनवा बने नम्रता से जो प्यारा I
रखे आचरण मे सदा भाईचारा I
हर बार जिसका न कथन हो न्यारा I
वही तो प्रभु राम का है दुलारा II५३ II

मनवा जिसे हो विजनवास प्यारा I
नही जो विचारों की आंधी से हारा I
प्रभु के प्रति जिसका दृढभाव सारा I
पाये वह उनके ही पग मे सहारा II५४II

मनवा न जिसमे कोई वासना है I
केवल प्रभु की कृपा कामना है I
जिसे रामजी के बिना ना सहारा I
वही भक्त प्रभु को सदा लागे प्यारा II५५II

मनवा अनाथों से जुड जाये जो भी I
हृदय मे जगाये दया– ज्योत जो भी I
क्रोध और मत्सर से जो दुर भागे I
वही अन्य भक्तों से है नित्य आगे II५६II

बंधा है जो भक्ति के काम से ही I
है धन्य जो राम के नाम से ही I
जो ना किसी आस के पिछे भागे I
वृत्ति उसी की सदा मुक्त लागे II५७II

मनवा न हो वृत्ति जो वासना की I
जिसे ना कोई आस भव–भावना की I
हो ध्यान जिसका प्रभु के चरण में I
न संदेह कोई रहे उसके मन में II५८II

मनवा बने काम तो कामना से I
प्रभुराम भी ना मिले कल्पना से I
यदि ना प्रभु के प्रति कामना हो I
भक्ति की कैसे कोई भावना हो II५९II

मनवा प्रभु को कहूँ कामधेनू I
या चिंतामणी कल्पतरु मै न जानूँ I
जिसकी कृपा से चले विश्व सारा I
तुलना मे उसकी है हर कोई हारा II६०II

मनवा कोई जब स्वयं दुख ही मांगे I
होंगे प्रकट कैसे सुख उसके आगे I
वृथा वाद जो भी करे सज्जनों से I
घिरा वह रहेगा सदा अडचनों से II६१II

मनवा जो नित आत्मचिंतन से भागे I
दुख और अशांति सदा उसमे जागे I
'मेरा–तुम्हारा' न दे कोई शांति I
श्रध्दा के बदले बढे अपनी भ्रांति II६२II

मनवा कामधेनु से ले छाछ कोई I
या चिंतामणी से अगर कांच कोई I
विवादों मे ही जिसने आयु गँवाई I
होती है उसकी सदा जग हंसाई II६३II

मनवा मति मूढ की थिर न होए I
स्मृती कामी को रामजी की न होए I
अति लोभ से ही न मिल पाये शांति I
अति भोग से ही बढें दीन भ्रांति II६४II

मनवा बिना भक्ति के व्यर्थ जीना I
दुखों की कमी मूढजन को कभी ना I
प्रभु रामजी से सदा प्रीत जोडो I
बिना राम के कुछ मिले भी तो छोडो II६५II

मनवा अशाश्वत क्यों भवसिंधू लागे I
यही खोजने मे रहो नित्य आगे I
बचा है कोई भक्त विष के असर से I
सदा राम का नाम लेना अधर से II६६II

मनवा प्रभु साँवले और सलोने I
दिखायी है सर्वत्र लीला इन्होने I
भक्तो की रक्षा यह जिसका धरम हो I
चिंतन प्रभु राम का भोर में हो II६७II

मनवा प्रभु राम है श्रेष्ठ जग में I
स्वयं काल ही है शरण उनके पग मे I
मनुज का वहाँ स्थान कैसे कोई हो I
चिंतन प्रभु राम का भोर मे हो II६८II

मनवा प्रभु राम भय को भगाये I
करो उनकी भक्ति जो सबकुछ भुलाये I
कृती हर तुम्हारी सदाचार में हो I
चिंतन प्रभु राम का भोर मे हो II६९II

मनवा रखो नाम पर पूर्ण श्रध्दा I
न छेडेगी पीडा न आयेगी बाधा I
अहं और आलस्य से मुक्त तुम हो I
चिंतन प्रभु राम का भोर मे हो II७०II

मनवा धुले नाम से पाप सारे I
मिले मोक्ष भी नाम ही के सहारे I
पथ पुण्य का तुम उसी से ही पाओ I
चिंतन प्रभु राम का भोर मे हो II७१II

मनवा न जिस नाम को दाम लागे I
जिव्हा को न उच्चारते कष्ट लागे I
इसी से जो भवशत्रु का सामना हो I
चिंतन प्रभु राम का भोर मे हो II७२II

मनवा पीडा तो सदा दुख बढाए I
पर नाम प्रभु का दुखों को भगाए II
इसी से यदि शिवजी का दाह कम हो I
चिंतन प्रभु राम का भोर में हो II७३II

मनवा है प्रभु–प्राप्ति पथ अडचनों का I
व्रत–उद्यापन तो नही निर्धनो का I
हृदय मे सदा रामजी की स्मृती हो I
चिंतन प्रभु राम का भोर मे हो II७४II

मनवा प्रभु नाम सबसे बडा है I
ग्रंथों मे हमने सदा यह पढा है I
वृथा ही कभी कोई संदेह ना हो I
चिंतन प्रभु राम का भोर मे हो II७५ II

मनवा नही योग, ना धर्म कोई I
न भोगे मनुज ना करे त्याग कोई I
भरोसा तुम्हारा प्रभु नाम पर हो I
चिंतन प्रभु का भोर मे हो II७६II

मनवा भक्ति से पापी निष्काम हो जाये I
जुडे जो प्रभु से वही मोक्ष पाये I
जिये भक्त जो रामजी के सहारे I
निवारे प्रभु के लगन व्दंव्द सारे II७७II

मनवा भरोसा प्रभु पर जिसे ना I
लिखा भाग मे उसके दुख दर्द रोना I
जहाँ सबके स्वामी है कैवल्यदाता I
करे ना कोई देह संसार–चिंता II७८II

मनवा हो पावन प्रभु–भावना ही I
तो भव की चिंता है करन मना ही I
न भव के कभी मोह की भूल करना I
है ही नही तो उसे कैसे धरना II७९II

मनवा प्रभु को हृदय मे बसाना I
गहरा यह भव–सिंधु है पार जाना I
कठिन यद्यपी पेट पापी है भरना I
तुम्हे तो है मत्सर को ही नष्ट करना II८०II

मनवा न मत्सरसे प्रभु नाम छोडो I
आस्थासे उसको अपने साथ जोडो I
प्रभु–प्राप्ति का मार्ग है नामभक्ति I
नही है किसी अन्य मे इतनी शक्ति II८१II

मनवा अतुल राम का नाम जग में I
अभागी के तो ना यह आये समझ में I
विषधर जहाँ शिवजी यह ने लिया है I
जहाँ दिन मानव का कहना ही क्या है II८२II

मनवा महेश्वर भजे राममूर्ति I
सुनाये उमा को स्वयं उनकी कीर्ति I
बल ज्ञान वैराग्य का जो है स्वामी I
करे नाम भक्ति वह कैलासधामी II८३II

मनवा विट्ठल नित्य शिवजी को धारे I
जिन्हे ना कोई राम जी से है प्यारे I
हुई जिससे थी शिवजी की दाह–शांती I
उसी नाम से अंत में सौख्य प्राप्ती II८४II

मनवा भजो राम विश्राम शिव का I
करे गौरीहर भी सदा जाप जिसका I
जो नाम इनका करे दाह शांत I
वही तो करेगा सुखी सबका अंत II८५II

मनवा जहाँ राम का नाम होगा I
सदा हर्ष के साथ विश्राम होगा I
बिना उसके जीवन मे दुख सारे आये I
सारे दुखों को यही तो मिटायें II८६II

मनवा नाम ही काम को नित भगाये I
मदन मारने का भी ढाढस बढ़ाये I
हे भक्त ही काम का शत्रु भारी I
तभी है अमर मारुति ब्रम्हचारी II८७II

मनवा मेरे राम का नाम प्यारा I
जो है सरल स्पष्ट निःशुल्क न्यारा I
लेते ही भवसिंधु हो पार सारा I
है धाम कैवल्य का यह हमारा II८८II

मनवा भोजन के समय नाम लेना I
आस्था से ही उसको आवाज देना I
चिंतन मे प्रभु के निवाला निगलना I
फिर होगा प्रभु को स्वयं तुमसे मिलना II८९II

मनवा न ले राम का नाम जो भी I
वृथा उसका जीवन तथा हीन वह भी I
जिसे वेद शास्त्रों ने है नित्य गाया I
तथा व्यास वाणी ने आगे सजाया II९०II

मनवा कभी राम से मुख न मोड़ो I
धन उसके ही नाम का नित्य जोड़ो I
बिना कुछ दिये ही यह व्यवहार होगा I
करो घोष उनका तो उध्दार होगा II९१II

मनवा जो ले नाम श्रध्दा से कोई I
उसमे न होंगे कही दोष कोई I
मिलेंगे प्रभु हो जहाँ नामभक्ति I
है राम के भक्त शिव और शक्ति II९२II

मनवा प्रभु राम है अन्नदाता I
उन्हे ही तो सारे चराचर की चिंता I
निःशुल्क है रामका नाम प्यारा I
लेने से क्या जाये बोलो तुम्हारा II९३II

मनवा है जिनमे जलाने की शक्ति I
करे नाम भी दाह कम नाम भक्ति I
श्रध्दासे जो नाम ले पार्वती भी I
करो जाप उसका जो दे सद्गति भी II९४II

मनवा अजामिल जो रत पुत्र में था I
तरा नारायण नाम से अंत मे था I
तोते को हरिनाम जिसने सिखाया I
है ऐसी गणिका ने भी मोक्ष पाया II९५II

मनवा जो प्रल्हाद था राक्षसो में I
बसा नाम हरि का था उसकी नसों में I
पिता पातकी उसका यह सह न पाया I
कभी मुख से प्रभुनाम भी ले न पाया II९६II

मनवा बिना नाम के मुक्ति ना है I
मिलती अहंकार से यातना है I
आगे जो है सबका ही अंत होना I
श्रीराम अपने ही मुख से कहो ना II९७II

मनवा जब पत्थर तरे नामसे ही I
फिर काहे ना ये तरेंगे सदेही I
अगर हो किसी को भी संदेह मन मे I
ना वह कभी नाम लेगा जीवन मे II९८II

मनवा है वाराणसी पुण्यतीर्थ I
जहाँ जाते ही सारे पूर्वज कृतार्थ I
कहे शिवजी जो है सभी के ही सुख मे I
हो नाम प्रभु का सदा अपने मुख मे II९९II

मनवा कोई कर्म भी हो सके ना I
होता है जो पुण्य उसका मिले ना I
दया भाव जिसके न मन में कभी हो I
कहो मुख मे कैसे प्रभु नाम भी हो II१००II

मनवा न लो नाम तो यम सताये I
मिले नर्क यदि तर्क ही करते जाये I
श्रध्दा से जो राम का नाम लेगा I
तन मन में ना दोष उसके रहेगा II१०१II

मनवा मेरे नित्य ही नम्र रहना I
तथा सारे संतो को संतोष देना I
सत्कर्म हो धर्म तन का तुम्हारे I
श्रध्दा से पूजो सगुणरुप सारे II१०२II

मनवा प्रभु राम की कीर्ति गाना I
शरीर भाव को तो भुलाते ही जाना I
परस्त्री हो या कोई धन हो पराया I
उन्हे छोड प्रभु के शरण में हो काया II१०३II

मनवा सदा बोलता ही जो जाये I
अंदर ही अंदर स्वयं वह लजाये I
सदा कल्पनाओं के पीछे जो भागे I
प्रकट कैसे होंगे प्रभु उसके आगे II१०४II

मनवा विचारो से करनी सुधारो I
श्रध्दा से निज आचरण को सँचारो I
बोलो वही आचरण में भी लाना I
वृथा कल्पना के न घोडे भगाना II१०५II

मनवा कर्मों को लगन से निभाना I
तथा अपने ही आप पर काबू पाना I
सब के प्रति ही दया जो दिखाये I
वही तो समाधान जीवन में पाये II१०६II

मनवा सदा क्रोध का साथ छोडो I
तथा सज्जनों से ही सहवास जोडो I
जीवन मे दुष्टों का संग त्याग देना I
है मोक्ष ही लक्ष्य यह जान लेना II१०७II

मनवा है सत्संग का ऐसा जादु I
दुर्जन का पलभर में हो जाए साधु I
कृतिहीन बाते किसे काम आयी I
टले वाद, संवाद वह लाभदायी II१०८II

मनवा विवादों से ना लाभ कोई I
बातें तुम्हारी हों संतोषदायी I
जिन से न तन–मन को हो क्लेश कोई I
टले वाद संवाद वह लाभदायी II१०९II

मनवा बहस छोड संवाद करना I
अहं पर विवेकी बन मात करना I
अहं ही विकारो को ले आये भाई I
टले वाद संवाद वह लाभदयी II११०II

मनवा कहूँ सत्य कल्याणकारी I
लो खोज रस्ता लगे जो हितकारी I
नास्तिकता पाये ना स्थान कोई I
टले वाद संवाद वह लाभदायी II१११II

मनवा जनम बीते सुनते व कहते I
वहीं के वहीं पर कई वाद है रहते I
दांभिक बहस तो है संदेहदायी I
टले वाद संवाद वह लाभदायी II११२II

मनवा किया है न हित पंडीतों ने I
कई तो बने ब्रम्हराक्षस घिनौने I
प्रभु से बडा और पंडीत न कोई I
धरो नम्रता नित्य ही मेरे भाई II११३II

मनवा केवल कहने से क्या मिलेगा I
अहंकार पर दिन-ब-दिन यह बढेगा I
कृती के बिना सारी बातें अधूरी I
यह भी तो है जान लेना जरुरी II११४II

मनवा न हो वाद तो बात करना I
अहं पर पर विवेकी बन मात करना I
बोलो वही जो कृति मे हो लाना I
सदा भक्ति के मार्ग पर भाई जाना II११५II

मनवा जब था अंबरीष दुख से भारी I
ले जन्म उसके लिए चक्रधारी I
क्षीरसिंधु जो भेट मे दे निशानी I
उपेक्षा करे ना वह भक्ताभिमानी II११६II

मनवा करे प्रार्थना जब गजेंद्र I
तत्काल दौडे वहाँ राघवेंद्र I
बचाए सभी को यह जीवन के दानी I
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II११८ I I

मनवा अजामिल का जो अंत आया I
उसने दयाघन से ही मोक्ष पाया I
अनाथो के आधार है चक्रपाणी I
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II११९II

मनवा प्रभु मत्स्य का रुप धारे I
तथा कूर्म बन पीठ पर ले धरा रे I
बचाने जो भक्तों को ले नीच योनी I
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II१२०II

मनवा पिता पुत्र को जब सताये I
प्रभू उनको नरसिंह बनकर बचाये I
है भक्त प्रल्हाद की यह काहानी I
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II१२१II

मनवा जब देवेंद्र आये शरण में I
समायी भू वामन के एक ही चरण में I
ले रुप भार्गव का जो चापपाणी I
उपेक्षा करे ना वह दासाभिमानी II१२२II

मनवा अहल्या को मुक्ती दिलाये I
तथा देवताओ के बंधन छुडाये I
करे युध्द रावण से जो एकबाणी I
उपेक्षा करे ना वह भक्ताभिमानी II१२३II

मनवा जब कृष्णा प्रभु को पुकारे I
सब छोड दौडे जगत के सहारे I
कलीयुग में पर जो है बन बैठे मौनी I
उपेक्षा करे ना वह भक्ताभिमानी II१२४II

मनवा दिनानाथ कहलाते हैं जो I
लेनेवाले कल्कि अवतार है जो I
अधूरी है जिनके लिए वेदवाणी I
नुपेक्षी कदा देव भक्ताभिमानी II१२५II

मनवा है अवतार भक्तोके लिए ही I
धारे प्रभु वेश उनके लिये ही I
ऐसे प्रभु को न जो जान पाये I
चंडाल वह दुष्ट पापी कहलाये II१२६II

मनवा जिसे रामजी की लगन हो I
कथाओं में उनकी सदा जो मगन हो I
ऐसे में क्या देह की भावना हो I
ईश्वर में ही जब विलीन वासना हो II१२७II

मनवा तुम्हें कामना राम की हो I
तथा ना कभी वासना काम की हो I
विपरित सभी कल्पनाओं को छोडो I
सदा सज्जनों का ही सहवास छोडो II१२८II

मनवा है सत्संग से सदगति भी I
बदल जाती है दुर्जनों की मति भी I
है काम से हानि जीवन में सारी I
सदा हो मनातीत वृत्ति तुम्हारी II१२९II

मनवा न संकल्प यों ही उठाना I
उठाओ कोई तो लगन से निभाना I
बहस और शंकाओं को त्याग देना I
एकांत में राम का नाम लेना II१३०II

मनवा नही राम–सा अन्य जग में I
जो एकवाणी तथा दृढ वचन में I
जिनकी कृपा से है उध्दार सब का I
विवेकी बनो वह है आधार सबका II१३१II

मनवा विवेकी समझकर ही बोले I
सहवास में उसके सुख–शांति डोले I
बिना सोचे समझे कोई मुख ना खोले I
तथा आचरण के नियम भी टटोले II१३२II

मनवा विरक्ती की अनूभुती जिसमे I
स्वरुप आत्म का तो रहे उसके बस में I
जिसे देखने छूने से पुण्यप्राप्ति I
तथा भ्रम के संवाद से हो समाप्ति II१३३II

मनवा विरक्ति अहं को मिटाये I
क्षमा–शांति के साथ करुणा जगाये I
करे लोभ और क्षोभ से अपनी रक्षा I
वही श्रेष्ठ योगी की पायेगा दीक्षा II१३४II

मनवा हो संगत सदा सज्जनों की I
बदल जाये जिससे मति दुर्जनों की I
फिर ना भी चाहो तो सद्भाव जागे I
तथा मृत्यु का कोई भय ही ना लागे II१३५II

मनवा घिरा भय से ब्रम्हांड सारा I
भयातीत का संत देखे नजारा I
जो देखकर ना रहे व्दैत कोई I
तथा भय की ना भावना मेरे भाई II१३६II

मनवा कहा ज्ञानियों का सही है I
अज्ञानी फिर भी वही का वही है I
तन से विषय वासना ही न जाये I
अहं के ही मारे न यह जान पाये II१३७II

मनवा न भ्रम ज्ञान का धन दिलाये I
कंगाल सबको यही तो बनाये I
ना जाने कब यह शरीर भाव जाये I
अहं के ही मारे न यह जान पाये II१३८II

मनवा भरा चेतना से सब आगे I
अभागी को मूर्ति भी पाषाण लागे I
बिना भाव के ना कोई पुण्य पाये I
अहं के ही मारे न यह जान पाये II१३९II

मनवा है आत्मा त्रिगुण की जकड में I
तभी तो रहे तन दुखो की पकड में I
त्रिगुण के न बाहर कभी वृत्ति जाये I
अहं के ही मारे न यह जान पाये II१४०II

मनवा तुम ज्ञानी की सेवा मे खोना I
कहे दास उनके चरण नित्य छूना I
गुरू के बिना ना ही पहचान पाये I
अहं की ही मारे न यह जान पाये II१४१II

मनवा कभी भी न संदेह जाये I
तभी आत्म का ना कोई ज्ञान पाये I
कठिण है अहंकार का नष्ठ होना I
संभव नही सख्ती से ज्ञान पाना II१४२II

मनवा न संभ्रम सही पथ दिखाये I
अज्ञान से कुछ समझ में न आये I
परखे बिना ही जो सिक्का उठाये I
असली या नकली नहीं जान पाये II१४३II

मनवा सत्य क्या है यह जान लेना I
जरा मन लगाकर उसे जान लेना I
संभव है हो जायेगी ईश प्राप्ति I
अज्ञान और भ्रांति की ही समाप्ति II१४४II

मनवा विषय से ही तो यह जनम है I
अज्ञान से ही तथा यह अहं है I
आत्मस्वरुप में समा जाये हम भी I
जनम से परे है स्वयं का उगम भी II१४५II

मनवा जो दिखता है कब तक रहेगा I
समय के प्रलय मे सबकुछ बहेगा I
जो आज है कल रहेगा न कोई I
सत्तत्व को खोज लो मेरे भाई II१४६II

मनवा न टूटे न लेवे जो मुक्ति I
अहं से है अनभिज्ञ यह आत्मशक्ति I
सहे ना जो अस्तित्व भी अन्य कोई I
सत्तत्व को खोज लो मेरे भाई II१४७II

मनवा न पीला न नीला न काला I
ना दृश्य–अदृश्य यह है निराला I
कहे दास हो श्रध्दा तो मोक्षदायी I
सत्तत्व को खोज लो मेरे भाई II१५०II

मनवा मिले सत्य तो खोजते ही I
बने वृत्ति स्थिर बोलते बोलते ही I
यदि संगति सज्जनों की धरोगे I
सत्तत्व की भाई प्राप्ति करोगे II१५१II

मनवा है अपनी जगह तत्व सारे I
करो सारे निर्णय स्वयं के सहारे I
है सत्य सबसे अलग मेरे भाई I
ना स्थान उसका ले पाये कोई II१५२II

मनवा शरीर या किसी तत्व से ना I
शांति किसी भी कलाशास्त्र से ना I
ना यज्ञ या भोग या त्याग से है I
पर सज्जनों के वह अनुराग से है II१५३II

मनवा संत या वेद या पंचतत्व I
परब्रम्ह पाने में इनका महत्व I
जैसे सहारे से चंदा दिखाये I
दिखते ही चंदा सहारा हटाये II१५४II

मनवा दिखे ना उसे खोज लेना I
है राज क्या यह जरा जान लेना I
सत्तत्व ऐसे ही ना हाथ आये I
व्याप्ती न उसकी कोई जान पाये II१५५II

मनवा जो दावा करे कुछ न जाने I
मिलेगा प्रभु तर्क से ऐसा माने I
अहं से न प्रभु को कोई देख पाये I
देखे तो उससे अलग रह न पाये II१५६II

मनवा कई ज्ञान–शाखाएं जग में I
पर कुछ–न–कुछ भेद रहता है उनमें I
मतभिन्नता ही कलह को मिटाये I
ज्ञान आत्म का तो कोई एक पाये II१५७II

मनवा श्रुति हो या हो न्याय शास्त्र I
स्मृति हो या हो वेद या तर्कशास्त्र I
जहाँ शेषने मौन धारण किया है I
वहाँ काम कुछ भी ना पंडीताई का है II१५८II

मनवा अहं–मक्षिका मुख में जाये I
तो ज्ञान–भोजन की रुचि न भाये I
मनसे न जिनके अहंभाव जाये I
वे ज्ञानप्राप्ति कभी कर न पायें II१५९II

मनवा न दुख दायी चर्चा भी न करना I
नाना विकारो सें हर पल ही डरना I
मिले ना समाधान जिससे किसी को I
ऐसे अहं से बचाओ सभी को II१६०II

मनवा अहं तो है जड ही दुखों की I
है व्यर्थ वाणी अहंकारियों की I
अहं को जो छोडे वह सुख सारे पाये I
अहं से सदा ही स्वयं को बचाए II१६१II

मनवा अहं से ही सब नीति जोडे I
तथा कीर्ति अनीती के बल पर ही जोडे I
पछताये पर वे सदा मन ही मन में I
भटके मति उनकी अनिती के बन में II१६२II

मनवा जो तन को ही सर्वस्व माने I
कभी आत्म के हित को ही वे न माने I
जरा देह मति आत्ममती में मरोडो I
तथा सज्जनों से ही सहवास जोडो II१६३II

मनवा विषय वासना त्याग देना I
मन से ही निर्गुण की अनुभुति लेना I
कल्पित को ही कल्पना सें मिटाना I
सत्संगति मे स्वयं को जुटाना I I १६४ I I

मनवा जो चिंतन हो देहादिको का I
आसक्ति में खोयेगा मन उसी का I
हरिभक्ति से ही तो है मोक्ष पाना I
सत्संगति मे स्वयं को जुटाना I I १६५ I I

मनवा अहंसे बढे देहबुध्दि I
स्त्री पुत्र या मित्र की मोहवृध्दि I
यदि जन्म – मृत्यु से है मोक्ष पाना I
सत्संगति मे स्वयं को जुटाना I I १६६ I I

मनवा चिरंतन का निर्धार करना I
कहे दास मन में न संदेह धरना I
सतत्व पर अपना हर पल लगाना I
सत्संगति मे स्वयं को जुटाना I१६७ I I

मनवा जो धारण करे संतवृत्ति I
बचाये उसे दीन होने से भक्ति I
गृहस्थी सदा देहबुध्दि बढाये I
संतो को पर कोई बाधा न आये I I१६८ I I

मनवा लो संतो से ही जानकारी I
अंहकार छोडो जो है नाशकारी I
स्मरण नित्य निर्गुण का करते ही जाना I
विषय वासनाओं को मन से भुलाना I I१६९ I I

मनवा हरो ज्ञान से देहबुध्दि I
करो भाई सत्तत्व की नित्य वृध्दि I
मन से न आत्मा कभी मेल खाये I
विचारो से ही सत्य का ज्ञान पाये I I१७० I I

मनवा न ज्ञान आत्म का दे दिखायी I
दिखे वह तो आभास है मेरे भाई I
निराकार–निर्गुण समझ में न आये I
अहंसे कोई कल्पना कर न पाये II१७१II

मनवा है विषयों का ज्ञान ही अविद्या I
तथा जो है सत्तत्वसे वह सुविद्या I
विद्या–अविद्या रुप दो कल्पना के I
रहे उसमें ना भेद कुच आगे जाके II१७२II

मनवा घमंड रुपी राहु जो आये I
सदा ही स्वरुप के गगन पर वह छाये I
दिशाओं से चारो घिरा है अंधेरा I
जरा सोचो समझो यह कैसा जहै फेरा II१७३II

मनवा न सत्तत्व को चक्षु देखे I
टिके ना यदि ज्ञानचक्षु भी देखे I
परममोक्ष तो केवल आत्मा दिलाये I
प्रभु आत्मज्ञानी को सबसे बचाये II१७४II

मनवा ब्रम्हाजी लिखें भाग्यरेषा I
पर उनका ही भाग्य है किसने देखा I
प्रलय मे तो शिवजी जगत को जलाये I
है किन्तु कोई उन्हैं जो मिटाये II१७५II

मनवा जगत मे है आदित्य बारह I
हैं अनगिनत इंद्र तो रुद्र ग्यारह I
इन देवताओ मे ईश्वर मिले ना I
परम ईश का तो पता ही चलेना II१७६II

मनवा न परब्रम्ह टूटे न फूटे I
न चल पाये और ना ही स्थल वह से छुटे I
जिसे आँख भी ना कभी देख पाये I
अहं से न कोई उसे जान पाये II१७७II

मनवा उसे पूजना जो भी भाये I
ऐसे न प्रभु को कोई खोज पाये I
करोडों मे है देव या देवताएँ I
भक्ति वही श्रेष्ठ जो मन पर छाये II१७८II

मनवा है जिसने यह त्रिभुवन बनाया I
उसे कोई भी ना कभी खोज पाया I
अखियाँ जिसे ना कभी देख पाती I
अनुभूति उसकी न गुरुबिन है होती II१७९II

मनवा गुरु तो करोडों है होते I
कई मंत्र विद्याएँ वे आजमाते I
जो वासना ओ पर काबु न पाता I
न है वह गुरु और न है मोक्षदाता II१८०II

मनवा जो तांत्रिक तथा ठग और लोभी I
नास्तिक और निंदक तथा मत्सरी भी I
साधू न वह जो है उन्मत्त व्यसनी I
गुरु तो वही है जो है आत्मज्ञानी II१८१II

मनवा है जिसमे सदा वासना ही I
जिसका कृतीशून्य है बोलना ही I
कहा अपना जो आचरण में भी लाये I
खोजो गुरु ऐसा यदि खोज पाये II१८२II

मनवा जो ज्ञानी विवेकी विरागी I
तथा तो कृपालू क्षमाशील योगी I
चतुर दक्ष पंडित जो व्यवहार जाने I
उसे ही गुरु विश्व सारा यह माने II१८३II

मनवा न था जो न है आगे आया I
संतो की वाणी ने है यह सिखाया I
जिव्हा पर बसे शारदा उनकी मानो I
जरा आत्म के रुप को तुम भी जानो II१८४II

मनवा जो सस्वरुप मे ही समाये I
चिंता तथा भय से ही मुक्ति पाये I
जो सब में समाये नजर कैसे आये I
अलग से वह अस्तित्व कैसे दिखाये II१८५II

मनवा निकट रामजी है तुम्हारे I
तुम्हे सत्य है नित्य खोजना रे I
नाता है गहरा इन्ही से तुम्हारा I
छोडो अहंकार अपना यह सारा II१८६II

मनवा यह ब्रम्हांड सब एक ही है I
पर स्थान उसे सस्वरुपमें नही है I
जो भी दिखे देखते उसको जाना I
बिना मन लगाये ही स्वानंद पाना II१८७II

मनवा ज्ञान से ही शरिर को भुलाना I
विदेही बने भक्ति के पथ से जाना I
अनासक्ति से वासना को मिटाना I
बिना मन लगाये ही स्वानंद पाना II१८८II

मनवा उन्हे जानो जग जो बनाये I
जिन्हे देखते ही सभी मोक्ष पाये I
त्रिगुण में ही निर्गुण को तुम आजमाना I
बिना मन लगाये ही स्वानंद पाना II१८९II

मनवा प्रभु जग बनायें न पालें I
वाणी तथा भ्रम से वे हैं निराले I
छबि कल्पनातीत की मन में लाना I
बिना मन लगाये ही स्वानंद पाना II१९०II

मनवा न जिसका शरिरभाव जाये I
कभी सस्वरुप को न वह जान पाये I
अज्ञान मन में जब तक वह धारे I
पाये न परब्रम्ह अहं के मारे II१९१II

मनवा परमात्मा समझ में न आये I
अव्दैत के भाव से उसको ध्याये I
जहाँ पर अधूरे है दृष्टान्त सारे I
वहाँ संग–निःसंग दोनों है हारे II१९२II

मनवा प्रभु ज्ञानी है ना अज्ञानी I
वेदों में भी जिनकी अधूरी कहानी I
जिन्हें दृष्य–सदृष्य की भी स्थीति ना I
जिनका स्वरुप जान पाये श्रुति ना II१९३II

मनवा करे प्रश्न साधक तो ऐसा I
हृदय में बसें जो स्वरुप उसका कैसा I
आये जो मृत्यु कहाँ पर वह जाये I
क्या दुसरा वह हृदय खोज पाये II१९४II

मनवा प्रभु का स्वरुप हो तो ऐसा I
भरा हर दिशामें हो आकाश जैसा I
न आये कहीं से न जाये कही है I
उसके बिना कोई स्थान ही नही है II१९५II

मनवा गगन में जो अणु–रेणु छाये I
रहते है राघव उन्ही में समायें I
जिसे देख ले अपने जैसा बनाये I
जहाँ दृश्य–अदृश्य कुछ रह न जाये II१९६II

मनवा गगन सा स्वरुप रामजी का I
चिंतन से जिनके न दुख है कहीं का I
जिन्हें देखते वासना ही रहे ना I
दर्शन से जिनके कभी मन भरे ना II१९७II

मनवा गगन का न कोई किनारा I
दृष्टांत यह भी प्रभु को अधूरा I
अव्दैत का भाव हो जिसमें पाये I
फिर कैसे व्यापक कहो वह कहाये II१९८II

मनवा प्रभु है अनंत और अनादि I
चले ना अकारण जहाँ तर्कबुध्दि I
जिसे गूढ–अव्दैत ने नित्य बाँधा I
गुरु की कृपा से जो है सीधासादा II१९९II

मनवा ज्ञानसे ही तो है ईशप्राप्ति I
वहीं सर्वसाक्षी स्थिती की समाप्ति I
रहे उन्मनी में न संवाद कोई I
दिखे राम ही राम सर्वत्र भाई II२००II

मनवा न प्रभु बिन है एहसास कोई I
हृदय में न है द्वैत का भास भाई I
प्रतिक्षा से ही तो प्रभु की है प्राप्ति I
विदेही अवस्था में शांति की व्याप्ती II२०१II

मनवा भले ही प्रभु तुमने जाना I
नहीं साधना का कोई भी ठिकाना I
बढे आत्मबुध्दि श्रवण भक्ति से ही I
मिले धन्यता संत के संग से ही II२०२II

मनवा मेरे बुरी संगत ही छोडो I
तथा नित्य संतो से सहवास जोडो I
सहवास जिनका दुखों को मिटाये I
बिना साधना के ही पथ जो दिखाये II२०३II

मनवा सत्संग अन्य संगत को तोडे I
तथा मोक्ष से भी वह तत्काल जोडे I
सदा साधको को यह मुक्ति दिलाये I
तथा द्वैत की भावना ही मिटाये II२०४II

मनवा न इनसे रहे दोष कोई I
बने मूढ भी साधना योग्य भाई I
बढे ज्ञान वैराग्य सामर्थ–प्राप्ति I
कहे दास होगी उसे मोक्ष प्राप्ति II२०५II

II जय जय रघुवीर समर्थ II